3. मात्रा और शब्द

मात्रा ज्ञान भाषा लेखन का सबसे महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक बिंदु है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि यह जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। इसलिए शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना अत्यंत आवश्यक है। अतः प्रारंभ से ही बच्चों के मात्रा ज्ञान के अभ्यास पर अधिक बल देना चाहिए।

शिक्षण-संकेत

- शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को बताएँ कि स्वरों की मात्राएँ होती हैं, जिन्हें व्यंजनों पर लगाया जाता है।
- **अ से औ** तक सभी 11 स्वरों तथा अन्य वर्ण **अं-अः** एवं चंद्रबिंदु की मात्राओं से अवगत कराएँ।
- बच्चों को बताएँ, **अ** स्वर की कोई मात्रा नहीं होती पर **अ** सभी व्यंजनों में सम्मिलित होता है। बिना **अ** स्वर के सभी व्यंजन आधे होते हैं। जैसे– क् ख् ग् घ् ङ्।
- बच्चे वर्णों से परिचित हो चुके हैं, वे मात्राओं को भी जान गए हैं। अब उन्हें शब्द बनाना बताएँ।
- समझाएँ, वर्णों को सही क्रम में जोड़ने से शब्द बनाए जाते हैं। बताएँ, जो शब्द एक निश्चित अर्थ दे वही शब्द होता है।
- बच्चे पिछली कक्षा में दो, तीन तथा चार वर्ण वाले शब्द बना चुके हैं। अब वे मात्रा लगाकर शब्द बनाने सीखेंगे।
- पाठ पृष्ठों पर दिए चित्रों तथा अन्य शब्दों के माध्यम से (आ ा) (इ ि) (इ ी) (उ ु) (ऊ ू) (ऋ ृ) (ए े) (ऐ ै) (ओ ो) (औ ौ) तथा अं (ं), चंद्रबिंदु (ँ) और अः (ः) की मात्राओं के शब्दों का उच्चारण तथा लिखित अभ्यास करवाएँ।
- मात्राओं वाले शब्दों के उच्चारण पर विशेष बल दें।
- विशेष ध्यान दें कि छोटी **इ**, बड़ी **ई** या छोटा **उ**, बड़ा **ऊ** बोलकर बच्चों को मात्राओं का अंतर समझाना अशुद्ध तरीका है। ऐसा न करें बल्कि ह्रस्व और दीर्घ उच्चारण के माध्यम से इन मात्राओं का अंतर समझाएँ।
- प्रत्येक बच्चे के उच्चारण पर ध्यान दें। यदि बच्चों का मात्रा उच्चारण सही होगा तभी वह सही वर्तनी लिख पाने में सक्षम हो पाएँगे।
- 'आपने सीखा' के बिंदुओं द्वारा पाठ की दोहराई करवा लें।
- पाठ अभ्यास करवाने में बच्चों की यथासंभव सहायता करें।